श्रीसीतारामाभ्यांनमः

वेद, शास्त्र, पुराणादि आर्ष - ग्रन्थों से आधारित
टिप्पणियों द्वारा प्रामाणिकता से युक्त

श्रीमद्रामसूक्तम्

(भाव - बोधनी टीका सहित)
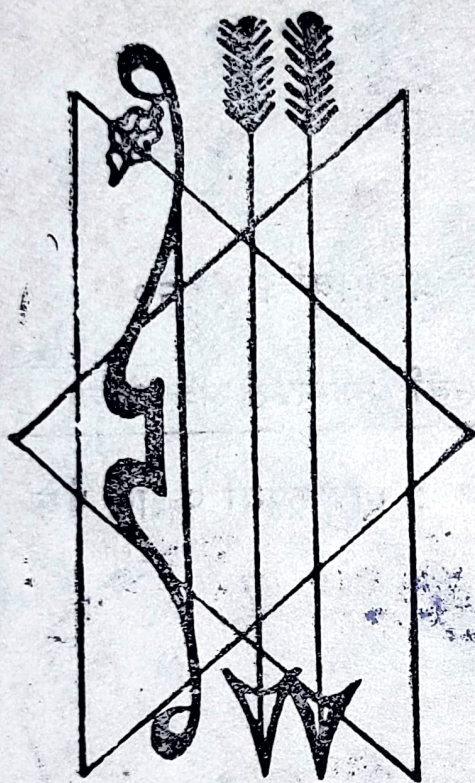
अनन्त श्री विभूषित श्रीमद्रामानन्दीय वैष्णव
द्वारा प्रतिष्ठापनाचार्य वर्य ब्रह्मर्षि तपोमूर्ति
१०८ श्री स्वामी श्रीमद्गोपालदासजी 'यज्ञकर्ता'
महाराज जूदेव के कृपा - पात्र—

अकिंचन राजकिशोरदास
आचार्य, एम. ए (साहित्य)

द्वारा विरचित

ब्रह्मर्षि १०८ श्री स्वामी राजकिशोरदास जी महाराज
आचार्य, एम. ए. (साहित्य)

भगवान श्री सीताराम जी

समर्पणम्

रामसूक्तमिदं स्वामिन् वृहती छन्देन बद्धिता ।
बालतोतलि मयाभाषां सादरं प्रतिगृह्यताम् ।।

आध्यात्मिक साधना केन्द्र :
माँ रेवा-तट (सतधारा)
जि० नरसिंहपुर (म. प्र.)

अकिंचन-सेवक :
राजकिशोरदास

दो शब्द

•

परम पूजनीय स्वामिपाद ब्रह्मर्षि १०८ श्री राजकिशोर दासजी महाराज—'सघन - धार्मिक - भावना - अभियान' के अन्तर्गत जन - कल्याणार्थ बहुत महत्त्वपूर्ण साधना कर रहे हैं। अपरम्परावादी अधुनातन युग में पुरातन-परम्परा के पुनरुद्धार का प्रयास अपने आप में एक महत् साधना है। दिग्भ्रमित भारतीय - मानस को सद्मार्ग का ज्योति - दर्शन कराके पूज्यपाद महाराजजी राष्ट्रगुरु की भाँति राष्ट्र को आध्यात्म-मंत्र दे रहे हैं; यह हम सबका सौभाग्य है।

प्रस्तुत 'श्रीमद्रामसूक्तम्' अस्थिर एवं कुण्टित मन को स्थैर्य और धैर्य प्रदान करने वाला सञ्जीवनी-मन्त्र है, जिसके प्रकाशन का सुयोग पाकर हम कृतकार्य हुए हैं। इस प्रकाशन हेतु पूर्ण आर्थिक - दान देकर परम भक्त श्रीमान् कुँअर राजेन्द्रसिंह जूदेव, दरी (सागर) ने जो उदारता दिखाई है, तदर्थ शुभ-कामनाओं सहित हम कुँअर साहब के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

विनीत :

—जमुनादास वर्मा

नम्र निवेदन

माधुर्य-महोदधि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीमद्रामभद्र जी, कोटि काम कमनीय, अनन्त शोभा के धाम, नित्य-किशोर, जिनकी महिमा वेदों में नेति-नेति कहकर गान किए हैं, अनन्त कोटि आत्मायें जिनका अंश हैं। ऋषि, महर्षि, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, नाग, मुनि, देवता सभी जिनका नित्य, परम यशोमय अप्रमेय गुणगान गाते हैं। जो श्री शंकर जी के हृदय-मानसर के दिव्य-राजहंस हैं, वे जगदात्मा, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र परमेश्वरमय, नित्य भक्त-भयहारी रघुनन्दन श्रीराम जी स्वयं अपनी इच्छा से जगत-पावनी माधुर्य और ऐश्वर्यमयी लीलायें जगत में करते हैं। वह इसलिए कि उसे दर्शन श्रवण व गा-गाकर प्राणी इस संसार बन्धन से मुक्त हो नितान्त सुखी हो जावें।

भगवान श्री का चरित्र परम उदार पतित-पावन है। उसका कोई ओर-छोर नहीं। शिव, सनकादि, नारद, बाल्मीकि, व्यास आदि से लेकर आद्याप्रभृति भगवान की कृपा जिन पर हुई सभी उनका यशोमय गुण गाते आ रहे हैं। वह इसलिए कि उनकी वाणी पवित्र होती है। भगवान श्री का चरित्र अक्षुण्य अकथनीय है, यह सब जानते हैं किन्तु बिना कुछ कहे नहीं मानते।

तो इस बालतोतली भाषा में 'श्रीमद्रामसूक्त'' के सृजन का एकमात्र यही हेतु है। विगत वर्ष में सेवक को कुछ समय के लिये अनन्त श्री १०८ सच्चिदानन्द, आनन्दघन स्वरूप परम पूज्यवान, श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि स्वामी श्री मद्गोपालदास जी ''यज्ञकर्ता'' महाराज जूदेव की सान्निद्ध प्राप्त हुई। श्रीरामतत्वान्वेषण में आप सिद्ध महामहिम हैं।

यद्यपि आप नित्य सहजावस्था, स्व स्वरूपानन्द में स्थित रहते हैं तथापि अपनी सहजानुकम्पा से ही श्रीराम-भक्तों को तत्वार्थं का नित्य रसपान कराते हैं। तो उन्हीं में से सेवक को यत्किंचित जो श्रुतिपथ में मिला है उसी को प्रस्तुत छन्द शैली में निबद्ध कर उन्हीं दयामय के पावन कर-कमलों में सादर अर्पित करता हूं।

इस श्रीमद्राम-सूक्त के छन्दों को उज्जैन कुम्भ पर्व पर विद्वत् प्रवर आचार्य श्री गिरिधर जी मिश्र, प्रज्ञाचक्षु जी महाराज, (सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय काशी) को सुनाया था, तो आपने अपनी उदारता से अत्योत्तम प्रशस्ति किये जो आठवें पृष्ठ पर अंकित है। अनेक विख्यात विद्वानों की प्रशस्तियाँ हैं, किन्तु इस छोटी सी आँख में "नौ मन काजल" कैसे लगाऊं।

अस्तु हमारे परम हितैषी विद्वानों को ही श्रेय है कि हमारा उत्साहवर्धन किये हैं। यद्यपि इस सूक्त की रचना कुछ बड़े रूप में हुई थी; किन्तु एक बार पूज्य महाराज श्री के साथ चर्चा हुई तो आपने श्रीराम मन्त्रार्थ और श्रीराम जी की द्वादश कलाओं की ओर प्रकाश डालते हुए द्वादस छन्दों का ही एक स्वतन्त्र रामसूक्त लिखने का आदेश प्रदान किये। अस्तु प्रस्तुत सूक्त में द्वादशछन्दों का ही संक्षिप्त टीका और जिज्ञासुओं के समाधान हेतु मन्त्र रचना का क्या आधार है, उसके लिए टीका के बाद टिप्पणी द्वारा बड़े उपानिषद् गीतादि अर्थ ग्रन्थों का सांकेतिक प्रमाण भी नीचे दे रहे हैं और शेष मन्त्रों को श्री रामनाम तत्वार्थ के नाम से प्रथक प्रकाशित करने का विचार है। उसमें तत्वार्थ बोधनी पीयूष टीका तथा अन्यान्य विद्वानों की प्रशस्तियाँ समाविष्ट होंगी।

अकिंचन

राजकिशोर दास

आचार्य, एम ए. (साहित्य)

कहां क्या पढ़ें ?

प्रसस्ति-पत्रम्

श्रीरामसूक्तं समलोकि सम्यक्
यत् प्रवदद्राजकिशोर दासः ।
सद् युक्तिभिः मण्डित टीकया च
समान्वितं स्याद्विदुषां मुदे वै ॥

टीका च टीकता दिव्या वैष्णवी सरला सुधा ।
सूक्त मन्त्राश्च श्रीराम भक्तिदाः सन्ति द्वादश ॥
यावद्भूमिर्विभातेषा यावदेष चन्द्र भास्करौ ।
तावच्छ्रिराम सूक्तं वै राजतां विदुषां हृदि ॥

इति संस्तौति

आचार्य गिरिधर मिश्र
(प्रज्ञाचक्षुः)
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
(वाराणसी)

॥ श्रीरामः ॥

श्रीमद्रामसूक्तम्

मंगलाचरण

भक्तिवेदान्त निष्ठाय सहजानन्द स्वरूपिणे ।
श्रीमद्गोपालदासाय गुरुदेवाय नमोनमः ॥

अथविनियोगः

ॐ अस्य श्रीमद्रामसूक्त महांपुरुष मन्त्रस्य परम भागवत्पाद ब्रह्मर्षि श्रीमद्गोपालदास ऋषिः परमात्मा श्रीमद्रामचन्द्रो देवता बृहतीछन्दः श्रीरामचन्द्र प्रीत्यर्थे श्रीमद्रामसूक्त पाठे विनियोगः ॥

इस श्रीमद्रामसूक्त महापुरुष मंत्र के ऋषि परम भागवत् पाद अनन्त श्रीमद् स्वामी गोपालदास जी महाराज ब्रह्मर्षि हैं, तथा जगदाधार परमात्मा श्री रामचन्द्रजी देवता और बृहती छन्द[१] है। श्रीमद् रघुनाथजी की प्रसन्नता के लिए 'रामसूक्त' पाठ में (प्रथम) विनियोग किया जाता है ।

१--ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्थः प्रसव·····।
इस छन्दः की शैली में है ।

1

हरि ÷ ॐ।। श्रीमद्दाशरथि रघुनाथ एव रामो तस्माच्चरण रेखाभ्योऽमराश्च शक्तय ÷ ऽभिजायन्त। तथाऽयोध्याधिपत्युरग्रे नित्यं सेवन्ते साञ्जलि पुटा ÷ देवाश्चानन्त शक्तयश्चावतारा ÷ ।।१।।

परम वैभववान श्रीमद्रामजी कैसे हैं कि प्रथम तो दाशरथी याने दशरथ जी, जो, हैं सो दशाङ्ग रथ को धारण करने वाले साक्षात् वेद[१] नारायण हैं, जो कि कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी याने ज्ञान, उपासना और कर्मकाण्ड रूपी तीनों पटरानियों[२] से संयुक्त होकर दशोंदिशि प्रकाशित हैं, उनके आनन्द को बढ़ाने वाले रघुनाथ याने रघु = जीवों के एक मात्र जो नाथ प्रतिपालक स्वामी हैं, उन परमात्मा श्रीराम जी की चरण - रेखाओं से इन्द्रादिक समस्त देवता दुर्गादिक समस्त शक्तियाँ व समस्त अन्य अवतार उत्पन्न हुए, पश्चात् उन अयोध्याधिपति भगवान श्रीराम जी के समक्ष वे सब अनन्त देवता वृन्द शक्तियाँ व चौबीसों अतवार दोनों हाथों को जोड़ कर नित्य सेवा में रत रहते हैं[३] ।।१।।

१–आयुर्वेदो गांधर्वं धनुर्वेदो चाथदर्शनम् ।
इतीमानि दशंगाति रथनामानि यप्य स: ।।
ज्ञेयो दशरथौ वेद: साध्य साधन दर्शन: । (शिव सहितायां)

२–तासां क्रिया तु कैकेयी सुमित्रोपासनात्मिका ।
ज्ञान शक्तिश्च कौशल्या वेदो दशरथो नृप: ।। (शिव सहितायां)

३–(क) एवं सर्वेऽवतारा: श्री रामचन्द्र चरण रेखाभ्य: समुद्भवन्ति तथा अनन्त कोटि विष्णुवश्च चतुर्व्यूहश्च समुद्भवन्ति । यश्चानंत कोटि संख्यका: वद्धांजलि पुटा: सर्वं कालं समुपासते ।(श्री विश्वंभरोपनिषदे)
(ख) येऽवतारा विभो मुग्धे जायन्ते विश्व हेतवे ।
तेऽपि रामांघ्रि चिन्हेभ्य: सम्भवन्ति पुन: पुन: ।। (महारामायणे)

हरि ÷ ॐ।। श्रीमद्राम भद्रो पूर्णं ब्रह्मेति तस्मादहस्र

चतुष्पादै ÷ ऽन्शेभ्यो विश्वमखिलम्परिव्याप्तम् ।

द्वादशाश्च कलयाभिर्परिपूर्णतमो विरजाया ÷ परे पारे

सपरिकरो ऽभि संस्थितम् ।।२।।

सच्चिदानन्द आनन्द-घन, चिद् अचिद् विशिष्ठ परमात्मा श्रीरामभद्र जी अपनी अपरा[1] प्रकृति द्वारा रचित अचेतन जगत् में परा प्रकृति के स्फुरण-विलास से स्वेच्छापूर्वक अपनी पूर्ण षोडश कलाओं में से चार पाद याने सोलह आने में चतुरांश—चार आने बराबर ब्रह्मत्व की कला पूर्णता से कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों के समस्त शरीर धारियों में मणियों में[2] सूत्र की भाँति अपनी ईश्वरत्व अखण्डता से परिव्याप्त हो गये, शेष द्वादश कलाओं से स्वयं [3]परिपूर्ण सगुण-साकार स्वरूप से अपने श्रेष्ठतम् परिकरों सहित विरजा नदी के परे पार दिव्य साकेत धाम ऊर्ध्व[4] लोक में विराजते हैं ।।२।।

१—अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे परम् ।
जीव भूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ।। (श्री गीता)

२—मत्त: परतरं नान्यत्किंचिदास्ति धनञ्जय ।
मयि सर्वमिदं प्रोक्तं सूत्रे मणि गणा इव ।। (श्री गीता)

३—ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।। (पू० उपनिषदे)

४—ॐ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुष: पादोऽस्येहा भवत्पुन: ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शनानशने ।। (यजुर्वेद)

हरि ÷ ॐ। स सवितरी श्रीमद्राम चन्द्रो सगुण निर्गुणाभ्याम् । ततोऽपरिछिन्नाज्जगत्कारणञ्च परिछिन्निव ॥३॥

परम प्रकाश - पुञ्ज मरीचि - मण्डल में स्थित[1] परम-ऐश्वर्य मय श्रीमद् राघवेन्द्र[2] श्री रामचन्द्र जी, जो हैं सो सगुण-साकार, निर्गुण-निराकार याने छिन्न-अपरिछिन्न दोनों रूपों में अवस्थित हैं, सो कैसे कि प्रथम अपने परिछिन्न-साकार-सारूप्य से महा-महिम-माधुर्य और ऐश्वर्य युक्त नित्य-धाम श्री साकेत में विराजते हैं, तथा दूसरे निर्विकार चिन्मयता से परिव्याप्त अखिल जगदोत्पत्ति का आदि[3] कारण हैं ॥३॥

१—सूर्य्य मण्डल मध्यस्थं रामं सीता समन्वितम् ।

२—रघु: जीवानामिन्द्र: स्वामिन: महापुरुषो श्रीमद्राम चन्द्र: इति (राम रहस्ये)

३—(क) श्री राम एव सर्व्वं कारणं तस्य रूपद्वयं परिछिन्न मपरिछिन्नं, परिछिन्न स्वरूपेण साकेत प्रमदावने तिष्ठन् राससेव करोति, द्वितीयं स्वरूपं जगदुत्पादे: कारणम्-

(श्री विश्वंभरोपनिषदे)

(ख) यामिच्छसि महाबाहो तां तनुं प्रविशस्विकान् ।
वैष्णवीं तां महांतेजा यन्द्वाऽकाशं सनातनम् ॥

(श्री मन्द्वा० रा० उत्तरकाण्डे)

हरि ÷ ॐ।। यो ह वै श्रीमद्रामचन्द्रो परमात्मा यो ब्बिराड्। तस्मादखिलं देवाश्चानन्त लोकाऽभिजायन्त ।। तस्मादभिन्नान्शा ÷ महा विष्णवादय ÷ प्रजायन्ते ततो ब्बिराडाज्जायन्त भिन्नान्शोऽसंख्यदेवा ÷ ।।४।।

जो जगदाधार परमात्मा श्रीराम जी हैं उनके दिव्य तेजोमय विराड् स्वरूप से कोटि-कोटि अमित ब्रह्माण्ड[१] और प्रतिब्रह्माण्डों में निर्धारित इन्द्र, वरुण, मरुद्गण, अग्नि, सूर्य, चन्द्रादि सम्पूर्ण देवतागण उत्पन्न हुए। उन परात्पर, परतर परब्रह्म से अभिन्नांश महाविष्णु अष्टभुजाधारी भूमा पुरुष चतुर्भुज विष्णु नारायण जी जगत् पालक एवं भुक्ति-मुक्ति दाता हुए, तथा उन्हीं सनातन आदि देव श्रीराम जी के विराड् स्वरूप से कोटि-कोटि अनेक भिन्नांश[२] अमरगण याने देवता वर्ग उत्पन्न हुए ।।४।।

१–(क) दिखरावा तब मातुहि अद्भुद रूप अखण्ड ।
रोम रोम प्रति लागे कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड ।। श्री मानस

(ख) पातालमेतस्यहिवाद मूलं--------......श्री मद्भागवत महा पु० २/९/२६-३९

(ग) स श्रीराम: सवितरी सर्वेषां ईश्वर: यमेवैप वृणते स पुमानस्तु यमवैदस्माद् भू र्भु: स्व: त्रिगुण मयो वभूव
(विश्वंभरोपनिषदे)

२–सर्वे देवाद्विविधा: भिन्नांशा, अभिन्नांशाश्च श्री रघुवरमुभये सवन्ते भिन्नांशा ब्रह्मादय: अभिन्नांश नारायणादय: ।।
(श्री विश्वम्भरोपनिषदे)

हरि ÷ ॐ।। अनादि देवो वै द्विभुजी श्रीमद्रामो स चिदानन्दात्मा परमात्मा एव महांपूरुष ÷ ततो जातो जातोपाशकानां कार्य्यार्थञ्चानन्त सरूपेभ्योऽवतरन्ति च लीलामत्र कुर्वन्ति ।।५।।

भक्तों को नित्य अभयदान देने वाले परमात्मा श्रीराम जी कैसे हैं कि अनादि [१] जिनके पूर्व अन्य कोई परमात्मा का रूप नहीं था। यह नराकार भगवान का द्विभुज स्वरूप सर्व प्रथम है, जिनसे महाविष्णु अष्टभुजी वामापुरुष चतुर्भुजी विष्णु नारायणादि नराकार [२] श्रेष्ठ स्वरूप हुए। पश्चात् भक्त उपासकों की इच्छा रूप कार्य-कार्य्यार्थे [३] अनन्त-अनन्त रूपों को धारण कर यहाँ अवनि-मण्डल पर लीलायें करते हैं, उन समस्त अवतारी स्वरूपों में नराकार द्विभुज स्वरूप सर्व श्रेष्ठतम कहलाए। इस तरह श्रीरामजी समस्त अवतारों के परम कारण हुए; सो कैसे कि चिद = चिन्मय जीव और आनन्द नाम माया अधिष्ठान दोनों की नित्य दिव्यात्मा होने से परमात्मा और परम विभुदामय निराकार साकार दोनों के साक्षी होने से अपने अनन्त ऐश्वर्य से एकमात्र महापुरुष [४] हैं।।५।।

१–द्विभुजो जानकी जानि: सदा सर्वत्र शोभते ।
भक्तेच्छातो भवेदेष वैकुण्ठे तु चतुर्भुज: ।।
कल्पितं चावरं रूपं नित्यं द्विभुज मेवतत् ।।
परमं रस सम्पन्नं ध्येयं योग विदाम्वरै । (शिव संहिता)

२–स्थूलमष्टभुजं प्रोक्तं सूक्ष्मं प्रोक्तं चतुर्भुजं ।
श्रेष्ठं द्विभुजं प्रोक्तं तस्यादेतत्त्रयं भजेत् ।। (अनन्त संहितायां)।

३–उपासका नां कार्य्यार्थे ब्रह्मणो रूप कल्पना (इति श्रुतिः)।

४–यस्यांशे नैव ब्रह्मा-विष्णु महेश्वरा: अपि जाता महाविष्णुर्यस्य दिव्य गुणाश्च स एव कार्य्या कारणयो: पर परम पुरुषो रामोदाशरथिर्वभूव । (वेदसारोपनिषद्)

हरिः ÷ ॐ।। तस्माद्दक्षिणाङ्गदष्ट भुजी-भूमा दिव्य-गुणोमयश्च पुरुषोऽभिजायन्त। तथाऽनन्तैश्वर्यश्चासंख्य मा वैकुण्ठ वासिन ÷ बामाङ्गै रभिजायन्त ।।६।।

उन परात्पर परतर परमेश कोटि काम कमनीय अनन्त शोभा के धाम जो परम दिव्य वपु [१] हैं उनके दक्षिण[२] अंग से दिव्य गुणों[३] करके युक्त नित्य क्षीरसागर-निवासी श्रीमद् अष्टभुजी वामा-पुरुष हुए तथा उन महामहिम भक्तवत्सल श्रीमद्रघुनाथ जी के बाम अङ्ग से अनन्त ऐश्वर्यवान असंख्य-असंख्य रमा वैकुण्ठवासी लक्ष्मीपति विष्णुनारायणादि उत्पन्न हुए ।।६।।

१–सर्वे नित्याः शाश्वताश्च देहास्तस्य परात्मनः।
परमानन्द सन्दोहा ज्ञान मात्राश्च सर्व्वतः ।।
सर्वे सर्वगुणैः सर्व दोष बिवर्जिताः ।। (बाराह पुराणे)।

२–तद्दक्षिणांगात्क्षीराब्धिशायी वामांगद्रमा वैकुण्ठासीति हृदयात्पर नारायणो वभूव चरणाभ्यां बदरिको पवन स्थायी शृङ्गारान्नन्दनन्दनेति। (विश्वंभरोपनिषदे)

३–मन्त्र संख्या (६) की आखिरी टिप्पणी देखिये।

हरि ÷ ॐ।। श्रीमद्रामस्य महांक्रोधरेव नारसिहों जातोपेन्द्रश्च कटिमेखलादुरोर्भार्गं वेति। पर नारायणश्च मत्स्यावतारौ जातौ हृदयादाधार शक्त्या कूर्मावतारश्च ।।७।।

महामहिम राघवेन्द्र श्रीमद्रामभद्रजी का जो महा-प्रचण्ड कोप है, सोई साक्षात् नरसिंहावतार[1] है तथा कमनीय कटि प्रदेश से त्रिविक्रमधारी श्री वामनातार व उरू भाग जंघा से श्री परसुराम जी भृगुवंश में उत्पन्न होकर भार्गव कहलाये तथा अप्रमेय ऐश्वर्यवान्[2] भगवान श्रीराम जी की घनीभूत आधार शक्ति से कूर्मावतार जो सिन्धुमंथन के समय सुमेरु को धारण किये थे और हृदय से मत्स्यावतार तथा परनारायण जो विरजा नदी के पार दिव्य धाम में निवास करते हैं, ये दोनों उत्पन्न हुए ।।७।।

१—मत्स्यश्च राम हृदयं योगरूपी जनार्दनः ।
नारसिहों महा कोपो वामन कटि मेखला ।
भार्गवो जंघयोर्जातो बलरामश्च पृष्ठतः ।।

(सुदर्शन संहितायां)

२—ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः ।
ज्ञान वैराग्योश्चैव षण्णां भग इतीरणा ।।

— विष्णु पुराणे

हरि ÷ ॐ।। श्रीमद्रामस्यामित श्रृङ्गाररेव कृष्णश्च-

हलधरो जातो ततो पृष्ठेन तेन। तथा चरणाभ्यां नर

नारायणौ जातौ करुणादेष प्रबुद्धोऽभिजायत ।।८।।

अमित प्रभाव वाले श्रीमद्रामचन्द्र जी की अनन्त-अनन्त कमनीय मदन-दमनकारी परम रमणीय सौन्दर्य सुषमा श्रृङ्गार विलास ही साक्षात् श्री कृष्णचन्द्र जी हैं, जो शील स्वरूप में एक समान श्याम नील कान्ति मणि हैं, और उन्हीं परमात्मा श्रीराम जी के पृष्ठ भाग से बलराम जी हलधर हुए तथा दोनों चरणों से बद्रीविशाल में निवास करने वाले नर-नारायण भगवान हुए और उन्हीं दयामय की साक्षाद् करुणा से बुद्धदेव उत्पन्न हुए, इस तरह अन्यान्य समस्त अवतार श्रीमद्राम जी के अंश कलावतार तथा श्रीराम जी परिपूर्णतम् स्वयं भगवान हैं।[१] अतिरिक्त अंश कला-अवतार भगवान श्रीराम जी की चरण रेखाओं से उत्पन्न होकर बार-बार लोक शिक्षण हेतु भूतल पर आते हैं[२] ।।८।।

१—(क) बौद्धश्च करुणा साक्षात्कल्किश्चित्तस्य हर्षतः।
कृष्णः श्रृङ्गार रूपश्च वृन्दावन विभूषणः।
एतेचांश कलासर्वे रामस्तु भगवान् स्वयम् ।।
[सुदर्शन संहिता]

२—येऽवतारा: विभो मुग्धे जायन्ते विश्वहेतवे।
तेऽपि रामांघ्रि चिन्हेभ्यः सम्भवन्ति पुनः पुनः।
[महारामायणे]

हरि ÷ ॐ।। प्रजापत्युः परतरो शिवादयश्च देवात्पर-तरः श्रीमन्नारायणात्परतरोपेन्द्रश्च कृष्णादपि। परात्पर परतमो सनातनश्च परब्रह्मेति श्रीमद्रामो दाशरथि स्वराट् ।।६।।

अनादि सनातन देव श्रीमद् राम जी कैसे हैं कि सृष्टि-कर्ता प्रजापति ब्रह्मा और आशुतोष शिवजी, उपेन्द्र भगवान त्रिविक्रमावतार तथा इन्द्रादिक समस्त देवताओं से परेपार और श्रीमन्नारायण व कोटि काम कमनीय श्री कृष्णचन्द्रजी से भी परेपार परम परतर[1] नित्य शुद्ध सच्चिदानन्द आनन्द घन परब्रह्म सर्वतन्त्र स्वतन्त्र षडैश्वर्य करके परम ऐश्वर्यवान निश्चय ही सबसे परेपार समस्त देवताओं द्वारा नित्य वन्दित, परम उपासनीय भगवान[2] हैं ।।९।।

१—परन्नारायणाचैव कृष्णात्परतरादपि।
यो वै परतमः श्रीमान रामोदाशरथिः स्वराट ।।

(अनन्त संहितायां)

२—भरणः पोषणाधारः शरण्य. सर्व व्यापकः।
करुणः षड्गुणैः पूर्णो रामस्तु भगवान स्वयम् ।।

(महारामायणे)

हरि ॐ।। यस्यान्शत्तेन सत्वाधिपत्यो प्रजापतिश्च शम्भुरेव परात्परतरात्शक्तिमयोबभूव। तथा जाता महाविष्णुर्यस्य दिव्यगुणो कार्यकारणयो पर श्रीमद्रामो महांपुरुष ॥१०॥

जिन महत् यशोमय परमात्मा के अंश[1] से परम सत्वाधिपति जगत्पालक विष्णु-नारायण, प्रजापति ब्रह्मा, विश्वसंहारक महादेव-शिवजी हुए, व जिन परात्पर परब्रह्म से सम्भूत होकर सम्पूर्ण देवतागण परम शक्तिमान हुए तथा जिनके दिव्य गुणों करके महा-विष्णु भगवान् भये, वे परम तेजोमय परात्परतर महापुरुष श्रीरामभद्रजी कैसे हैं कि यदि व्यष्टि उपादान यह दृश्य जगत् कार्य रूप है, तो उसका समष्टि उपादान कारण परमात्मा विष्णु हैं और कार्य-कारण रूप इन दोनों व्यापारों से परे परम[2] कारण हैं ॥१०॥

१-विष्णुर्नारायण: कृष्णो वासुदेवो हरि स्मृत: ।
ब्रह्मा विश्वम्भरोऽनन्तो विश्वरूप कलानिधि: ॥
कल्मषघ्नो दया मूर्ति: सर्वग: सर्वसेवित: ।
परमेश्वर नामानि सन्त्यनेकानि पार्वति ॥ —महारामायणे

२-मंत्र संख्या (५) की आखिरी टिप्पणी देखें ।

हरि ÷ ॐ।। तस्मादभिन्नान्शा ÷ महाविष्णु ÷ सत्वा-
धिपत्यो चतुर्भुजायुधो क्षीराब्धे पद्मनाभौ शेषशायिन ÷।
ततो कमलोद्भव ÷ प्रजापतिर्श्रृष्ट्योपादान तत्व
सहितञ्च तस्मात्भिन्नान्शरभिजायत् ।।११।।

उन परिपूर्णतम् परब्रह्म श्रीमद् रामचन्द्रजी के अभिन्नांश महा सत्वाधिपति सात्विक प्राणियों द्वारा नित्य पूजित जगतपालक-जगदीश भगवान विष्णु जो चार भुजाधारी अपने सुकोमल अरुण-अरुण कर कमलों में दिव्यायुध शंख, चक्र, गदा, पद्म को धारण कर अखण्ड क्षीर सागर में शेषशायी हैं, (माता लक्ष्मी जिनका नित्य चरण पलोटती हैं) उनके गम्भीर नाभि मण्डल से दिव्य कमलनाल[१] निकला हुआ है तहाँ उस विशाल कमल कोष पर जगत रचयिता प्रजापति ब्रह्माजी सृष्टि उपादान परमात्मा श्रीराम जी की चार कलाओं से असंख्य ईश्वरांश जीवात्म तत्वों की अद्वय[२] सृष्टि सहित उन परमात्मा के सर्वप्रथम भिन्नांश देवता प्रगट हुए ।।११।।

१—शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

२—(क) सद्वारकोऽद्वारकश्च द्विविधा सृष्टिः ।
(ख) अद्वारको मूलरचना च सद्वारकः तदाश्रयः परिवर्तनम् ।
(श्री मद्वैदान्तदर्शनम्)

हरि ÷ ॐ।। चतुष्पादैर्प्रजापतिश्चरति गर्भे विश्व-

मखिलं यथा पूर्वमकल्पयन् । तस्मादन्शान्शद्देवाश्च

वहवो शक्त्या चानन्तप्प्रजासु यज्ञेन सम ÷

समृद्धयताम् ।।१२।।

चतुर्मुख प्रजापति ब्रह्माजी ने उन परमपिता पुरुषोत्तम परमात्मा जगदाधार श्रीराम जी के अंश = चतुष्पाद कलाओं से प्राप्त अद्वय सृष्टि का आदान कर, प्रथम समस्त देवतागण और बहुत-बहुत शक्तियाँ तथा सम्पूर्ण विश्व के सहित अनन्त-अनन्त प्रजा वर्गों की, पूर्व कल्पनानुसार[1] सद्वय सृष्टि-जगद रचना कर पश्चात् उन दोनों देवतागण और प्रजागण मनुष्यों के साथ परस्पर यज्ञ से[2] समृद्धि को प्राप्त होने का आदेश प्रदान किया ।।१२।।

१—सूर्य्याश्चन्द्रमसौधाता यथा पूर्वमकल्पयन् ।

(यजुर्वेद)

२—सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट काम धुक् ।।
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तुवः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्सथ ।।

(श्रीमद्भगवद्गीता)

श्रीमद् रामसूक्त - माहात्म

श्रीराम सूक्त मिदं श्रेष्ठं सर्वताप प्रणाशनम् ।
भुक्ति-मुक्तिश्च प्रदातारं रामभक्ति विशेषतः ।।
धन्य, धन्येति अहोभाग्यं यो पठेच्छ्रध्द्यान्वितः ।
पठनाद श्रवणाद्वापि महत्पुण्यं लभेन्नरः ।।
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय नित्यं पठेत् यः पुमान् ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो रामधामं सुगच्छति ।।

(पुष्पिका)

हरिः ॐ तत्सद् श्रीमद्गोपालदास स्वामिपादानां चरणाश्रित अकिंचन राजकिशोर दासेन विरचितं श्रीमद्रामसूक्तमिदं सम्पूर्णम् ।।

यह परम श्रेष्ठ श्रीमद्राम सूक्त दैहिक, दैविक, भौतिक समस्त तापों को नाश करने वाला और भक्तों के लिए सर्व-विधि भुक्ति याने सांसारिक सुलभनाएँ और अन्तः मुक्ति तथा विशेषकर भगवान की परमानन्दमयी भक्ति प्रदान करने वाला है ।।१।।

अहो, अहो ! जो मनुष्य श्रद्धा भक्ति पूर्वक इस श्रीमद्राम सूक्त को नित्य पाठ करता है, वह संसार में धन्य है, धन्य है तथा इस श्रेष्ठ सूक्त को नित्य पाठ करने व श्रवण मात्र से भी मनुष्य महान पुण्य को प्राप्त कर लेता है ।।२।।

ब्राह्म मुहूर्त याने सूर्योदय काल से ढाई घड़ी पूर्व प्रत्यूषा की मधुमय वेला में जो मनुष्य बिस्तर से उठकर स्वच्छ हो इस श्रीमद्राम सूक्त को नित्य पाठ करता है, वह सब प्रकार के पापों से मुक्त होकर श्रीराम जी के दिव्य धाम को प्राप्त करता है ।३।

(पुष्पिका)

इस तरह परमैश्वर्य करके युक्त श्रीमद् आचार्य चरण परमपूज्यपाद अनन्त श्री स्वामी गोपालदास जी महाराज के चरणाश्रित अकिंचन राजकिशोरदास द्वारा विरचित यह "श्रीमद्रामसूक्त" सम्पूर्ण है ।

उच्चारण हेतु संकेत

		चिन्ह
१. "अ" कार, "इ" कार, "उ" कार "ए" कार और समाहारित	ह्रस्व	—ı
२. "आ" कार, "ई" कार, "ऊ" कार, "ऐ" कार व्यंजन और आनुनासिक	दीर्घ	ı—
३. "ओ" कार, "औ" कार, "ये" कार ऊभौपक्षी स्वर गोलाकार	प्लुत	1
४. "अ" कार, "इ" कार, "उ" कार समाहारित और अव्यय	विसर्ग	÷

५. य = ज
ष = ख
म् = मऽऽ

} परिवर्तित उच्चारण

दैनिक - हवन

•

उपरोक्त 'श्रीमद्राम सूक्त' पाठ के पश्चात यदि हवन करना हो तो विनियोग के पश्चात् श्रीराम महा मन्त्र से अंगन्यास - करन्यास करके पीछे श्रीरामजी का ध्यान कर आचमनी करके प्रज्वलित अग्नि में प्रत्येक मन्त्रों के अन्त में, श्रीराम महामन्त्र बोलकर, उच्चस्वर से स्वाहाकार करके दैनिक - हवन, भगवान की प्रसन्नता के लिए, नित्य करना चाहिए।

अन्य कृतियाँ

- श्री मद्भागवद्धर्म प्रश्नोत्तरी (सटीक)
- श्री वेदान्त-दर्शन सूत्र (सटीक)
- श्री मूर्ति - प्रतिमा अभिज्ञान (सटीक)
- भारतीय तिथि त्यौहार विज्ञान
- श्रीरामनाम् तत्वार्थ सूक्तम् (संस्कृत) सटीक
- श्रीमज्जानकी सूक्तम् (संस्कृत) सटीक
- श्रीमद्मारुति सूक्तम् (संस्कृत) सटीक
- श्रीमद्गुरु सूक्तम् (संस्कृत) सटीक
- श्री रामनाम विज्ञान (संस्कृत) सटीक
- श्रीराम सुझाव (हिन्दी)

लेखिका—करुणादेवी श्रीवैष्णवं

पत्र भेजने का स्थाई पता—

संस्थापक :

आध्यात्मिक - साधना - केन्द्र

१२ वर्षीय अखण्ड महासंकीर्तन, सतधारा

पो०-बरमान, जिला-नरसिंहपुर (म. प्र.)

श्रीराम प्रेस

खत्रयाना मार्ग, झाँसी २८४००२